४. छापा

– ओमप्रकाश 'आदित्य'

मेरे घर छापा पड़ा, छोटा नहीं बहुत बड़ा
वे आए, घर में घुसे, और बोले–सोना कहाँ है ?
मैंने कहा–मेरी आँखों में है, कई रात से नहीं सोया हूँ
वे रोष में आकर बोले–स्वर्ण दो स्वर्ण !
मैंने जोश में आकर कहा–सुवर्ण मैंने अपने काव्य में बिखेरे हैं
उन्हें कैसे दे दूँ।
वे झुँझलाकर बोले, तुम समझे नहीं
हमें तुम्हारा अनधिकृत रूप से अर्जित अर्थ चाहिए
मैं मुसकाकर बोला, अर्थ मेरी नई कविताओं में है
तुम्हें मिल जाए तो ढूँढ़ लो
वे कड़ककर बोले, चाँदी कहाँ है ?
मैं भड़ककर बोला–मेरे बालों में आ रही है धीरे–धीरे
वे उद्‌भ्रांत होकर बोले,
यह बताओ तुम्हारे नोट कहाँ हैं ?
परीक्षा से एक महीने पहले करूँगा तैयार
वे गरजकर बोले, हमारा मतलब आपकी मुद्रा से है
मैं लरजकर बोला,
मुद्राएँ आप मेरे मुख पर देख लीजिए,
वे खड़े होकर कुछ सोचने लगे
फिर शयन कक्ष में घुस गए
और फटे हुए तकिये की रूई नोचने लगे
उन्होंने टूटी अलमारी को खोला
रसोई की खाली पीपियों को टटोला
बच्चों की गुल्लक तक देख डाली
पर सब में मिला एक ही तत्त्व खाली...
कनस्तरों को, मटकों को ढूँढ़ा सब में मिला शून्य–ब्रह्मांड
देखकर मेरे घर में ऐसा अरण्यकांड
उनका खिला हुआ चेहरा मुरझा गया

परिचय

जन्म : १९३६, गुरुग्राम (हरियाणा)
मृत्यु : २००९, भोपाल (म.प्र.)
परिचय : ओमप्रकाश 'आदित्य' हिंदी की वाचिक परंपरा में हास्य–व्यंग्य के शिखर पुरुष होने के साथ–साथ छंद शास्त्र तथा काव्य की गहनतम संवेदना के पारखी थे। आप हिंदी कवि सम्मेलनों में हास्य–व्यंग्य के पुरोधा थे।
प्रमुख कृतियाँ : 'इधर भी गधे हैं–उधर भी गधे हैं', 'मॉडर्न शादी', 'गोरी बैठी छत पर' (काव्यसंग्रह) आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य–व्यंग्य कविता में कवि ने आयकर विभाग के 'छापे' के माध्यम से आम आदमी की आर्थिक स्थिति, छापा मारने वालों की कार्य प्रणाली को दर्शाया है। कवि द्‌वारा किया गया छापे का वर्णन व्यंग्यात्मक हास्य उत्पन्न करता है।

और उनके बीस सूची हृदय में
रौद्र की जगह करुण रस समा गया,
वे बोले, क्षमा कीजिए, हमें किसी ने गलत सूचना दे दी
अपनी असफलता पर वे मन ही मन पछताने लगे
सिर झुकाकर वापिस जाने लगे
मैंने उन्हें रोककर कहा, ठहरिए !
सिर मत धुनिए मेरी एक बात सुनिए
मेरे घर में अधिक धन होता तो आप ले जाते
अब जब मेरे घर में बिल्कुल धन नहीं है
तो आप मुझे कुछ देकर क्यों नहीं जाते
जिनके घर में सोने-चाँदी के पलंग और सोफे हैं
उन्हें आप निकलवा लेते हैं
बहुत अच्छी बात है, निकलवा लीजिए
पर जिनके घर में बैठने को कुछ भी नहीं
उनके यहाँ कम-से-कम
एक तख्त तो डलवा दीजिए ।

('गोरी बैठी छत पर' से)

— ० —

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कवि ने छापामारों से माँगा:

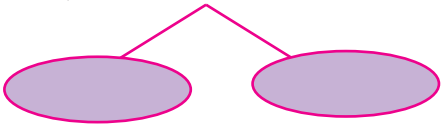

२. घरों की स्थिति दर्शाने वाली पंक्तियाँ:

समृद्ध ---------- अभावग्रस्त ----------

३. अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

शब्द संसार

रोष पुं.सं.(सं.) = गुस्सा
अर्जित वि.(सं.) = कमाया हुआ
अर्थ पुं.सं.(सं.) = पैसा/धन
कनस्तर पुं.सं(अं.) = टीन का पीपा
तख्त पुं.सं.(फा.) = लकड़ी की बड़ी चौकी

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

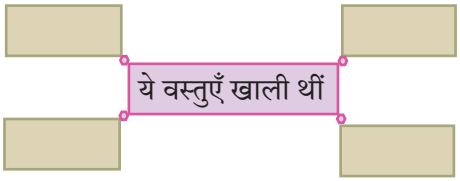

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कवि द्वारा छापामारों को दिए गए सुझाव

२. शयनकक्ष में पाई गई चीजें

(३) कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
अर्थ	बालों में
सुवर्ण	चेहरे पर
चाँदी	नई कविता में
मुद्रा	काव्य कृतियों में

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

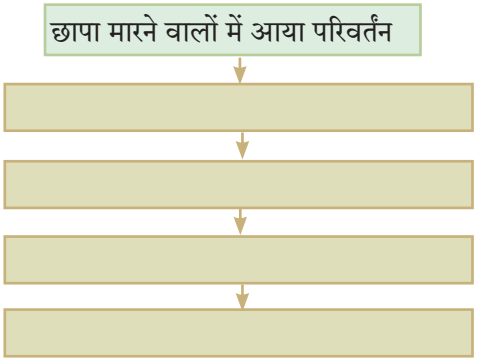

(५) ऐसे प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. अरण्यकांड २. तख्त ३. असफलता ४. अनधिकृत

(६) सोना, चाँदी, अर्थ और मुद्रा इन शब्दों के विभिन्न अर्थ बताते हुए कविता के आधार पर इनके अर्थ लिखिए।

(७) 'कर जमा करना, देश के विकास को गति देना है' विषय पर अपने विचार लिखिए।

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

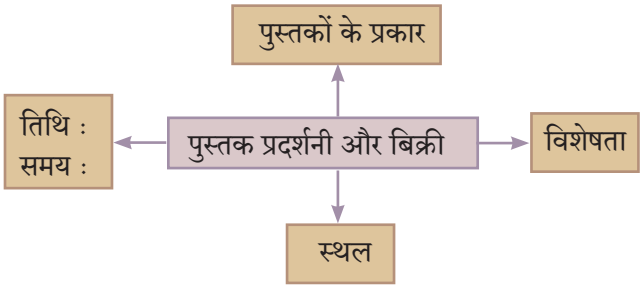

C37YNQ